No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

11966

जून, 2017

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) युद्ध क्या गान नहीं है ? रुद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव नृत्य, और शस्त्रों का वाद्य मिलकर एक भैरव-संगीत की सृष्टि होती है । जीवन के अंतिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आँखों से देखना, जीवन-रहस्य के चरम सौंदर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव — केवल सच्चे वीर-हृदय को होता है, ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरंतर संगीत है । उसे सुनने के लिए हृदय में साहस और बल एकत्र करो । अत्याचार के श्मशान में ही मंगल का — शिव का, सत्य-सुंदर संगीत का समारंभ होता है ।

(ख) वह नफ़रत करती है इस सबसे – इस आदमी के ऐसा होने से । वह एक पूरा आदमी चाहती है अपने लिए एक... पूरा... आदमी । गला फाड़कर वह यह बात कहती है । कभी इस आदमी को ही वह आदमी बना सकने की कोशिश करती है । कभी तड़पकर अपने को इससे अलग कर लेना चाहती है । पर अगर उसकी कोशिशों से थोड़ा भी फ़र्क़ पड़ने लगता है इस आदमी में, तो दोस्तों में इनका ग़म मनाया जाने लगता है ।

(ग) पर वह संसार
स्वत: अपने अंधेपन से उपजा था ।
मैंने अपने ही वैयक्तिक संवेदन से जो जाना था
केवल उतना ही था मेरे लिए वस्तु-जगत्
इन्द्रजाल की माया-सृष्टि के समान
घने गहरे अँधियारे में
एक काले बिंदु से
मेरे मन ने सारे भाव किये थे विकसित
मेरी सब वृत्तियाँ उसी से परिचालित थीं !
मेरा स्नेह, मेरी घृणा, मेरी नीति, मेरा धर्म
बिल्कुल मेरा ही वैयक्तिक था ।

(घ) प्रेमी तो प्रेम कर चुका, उसका कोई प्रभाव प्रिय पर पड़े या न पड़े । उसके प्रेम में कोई कसर नहीं । प्रिय यदि उससे प्रेम करके उसकी आत्मा को तुष्ट नहीं करता तो उसमें उसका क्या दोष ? तुष्टि का विधान न होने से प्रेम के स्वरूप की पूर्णता में कोई त्रुटि नहीं आ सकती । जहाँ तक ऐसे प्रेम के साथ तुष्टि की कामना या अतृप्ति का क्षोभ लगा दिखाई पड़ता है वहाँ तक तो उसका उत्कर्ष प्रकट नहीं होता । पर जहाँ आत्मपुष्टि की वासना विरत हो जाती है या पहले ही से नहीं रहती, वहाँ प्रेम का अत्यंत निखरा हुआ निर्मल और विशुद्ध रूप दिखाई पड़ता है ।

(ङ) सम्पत्ति ने मनुष्य को क्रीतदास बना लिया है । उसकी सारी मानसिक, आत्मिक और दैहिक शक्ति केवल सम्पत्ति के संचय में बीत जाती है । मरते-दम भी हमें यही हसरत रहती है कि हाय इस सम्पत्ति का क्या हाल होगा । हम सम्पत्ति के लिए जीते हैं, उसी के लिए मरते हैं । हम विद्वान् बनते हैं सम्पत्ति के लिए, गेरुए वस्त्र धारण करते हैं सम्पत्ति के लिए । घी में आलू मिलाकर हम क्यों बेचते हैं ? दूध में पानी क्यों मिलाते हैं ? भाँति-भाँति के वैज्ञानिक हिंसा-यंत्र क्यों बनाते हैं ? वेश्याएँ क्यों बनती हैं, और डाके क्यों पड़ते हैं ? इसका एकमात्र कारण सम्पत्ति है । जब तक सम्पत्तिहीन समाज का संगठन न होगा, जब तक सम्पत्ति-व्यक्तिवाद का अंत न होगा, संसार को शांति न मिलेगी ।

2. 'अंधेर नगरी' में राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ का उद्घाटन किस रूप में हुआ है ? विवेचन कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए । *16*

4. 'आधे-अधूरे' के कथ्य का विश्लेषण कीजिए । *16*

5. 'अंधा-युग' के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए । *16*

6. 'औरत' के कथ्य और प्रतिपाद्य की चर्चा कीजिए । *16*

7. ललित निबंध के रूप में 'कुटज' की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । *16*

8. 'ठकुरी बाबा' में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना की पड़ताल कीजिए । *16*

9. 'आक्टेवियो पॉज' के विचारों को उद्‌घाटित कीजिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) असंगत नाटक

(ख) हिन्दी जाति की अवधारणा

(ग) 'वसंत का अग्रदूत' में निराला

(घ) 'अदम्य जीवन' की मूल संवेदना